

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namani.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



· "是我们的是我们是这个,他就是我们的"我们是我们的"。 "我们就是这个人,我们就是这个人。" BENDER OF THE REPORT OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF STREET, AND THE PROPERTY OF THE PROPER ग श्रीविष्ण असपराज्येण ॥ शिरममुकं - महर्म भेरेन्से - कु.सा.मानाने. भाषत्या भारति त्रसार पोश्ति भारति भारति भारति वास्ति पास्ति भारति । जीरित रात्र दिवस्ति पारक्षितीं - आभगस्मावेस्तर क्कावेरन्य नैतर्भ प्रज्ञ ज्ञबद्यन्या मृतियाकाण कार्तस्यकारेन. काणप्रातसे न्याने वीं अपिद्वी अध्यविश्वािष्टि म्हरके नार्वे. ८ इमणा मां का तेव्या भवाते। अवना उर्वे स्व आहे. सम्बीम श्रीस्ट्रमाहे सम्बद्दी जिहुतपादावित कृषा अत्यावीहर वितंति-कवार्वे- शा-जर्गाकितरत- मृतं -भाष्येर्व. पेंच्यार्वि

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अं -हीं बीं सर्वभूत किवार शा दुर्वि सदारायारूत राजाय सुदर्शनाय -हें फर्-हीं अं स्वाहा। शति दिग्वंधः॥

गित्रस्थानं । चतुर्युनां पीत्वरकां शंरव चत्रं गद्ग धरां । मुक्ता प्ररण भूषाय्यां पद्म नेत्रं दिखेन्वतां । पीत्र गंधा विश्व मांगीं पीता भरण भूषिताम् । पद्म हस्तां सुपद्मांगीं गठ्य स्व सं स्थितं । देख दावव संहात्रीं महा विष्णु वर प्रशं । एवं ध्याचे न्महा विद्यां विष्णु साम्राज्य दार्थितां । अंते हें ।

॥ अंगे हें श्रीं तमः कार दल विषु अ तथना भिरामाथ श्रीराम चं दाव का का अंग हों तमी कारा वणाथ ॥ अंग श्रीं तमी भगवते वासु देवाथ ॥ अंग्रिंती तमी इते ताथ अर्ज श्रीं तमी प्राचित हों हों भी भी हैं पर्यं हों हायनाथ गरा अस्ति शाश्रीं वास्ति शाश्रीं वास्ति वासि वास्ति वासि वास्ति वास्त

॥ असुर देशहानव यदेर राहेरस भूत प्रेत ग्वेशन स् कृष्णां सिख्योगीनी उगक्रिमी इगाकिमी काकिमी साकिमी आणमंधर्व किंमर किंपुरुष महलरं नविद्याध्यरं न्यारण महोरग् महाभरं महामारी न्य तुः जारि क्यारी नेती षार् पंचक्रीरिकात्याय ती चार्डा सह मातृका गण सुरासुरगण रेव-यर भू-चराराष्ट भेरव नेताल रकंद पुरोगान् ग्रह तक्त भाग् इहपर जनम आए।, वेर. नहा हत्यादि नहा रादास संवंधादि कुत्या कर कुर कपर काष्य, पर यंत्र पर तंत्र पर पंत्र पर शक्त विव अयोगाद परातुरान ष्टात पर चक्र पर । होक दुक्तामात्य पुर तृपात दुनर्भ दुर्भेदा उनीतां दुष्टाचेद् दुः शकुर दुर्गतिं दुर्नर यवन स्वतः सूर - यां उतन बुक्ट रिषु, सर्प-चार' त्यापु वाश्चेक जाउचर' वन-चर' धराकाका चरारि व्या दि । जेवहारी मम सक्ष दुकार हम हम पन्य पन्य मध मध वि द्वं सथ विद्वंसथ फिद्य र जिन्द्य र ज्ञावय र मारथ र फिंदर

। भी दिय विद्रावय २ इं रिवेन न से मा व ज्रेण बाणेन खड़ोन गर्था पुसर्वन भन्नी वुड २ सहन्त्र वाह्वे सहन्त्र प्रहरणायुधं जय२ विजय २ अपराजित अन्तानहत सहरक्तनेत्र ज्वध २ जडवछ विश्व २०५ बहुरवप मधुसूदन महावराह मत्यवूर्ण महापुरुष वेषुं व तारायण पंसनाभ गाविद दामादर हणीकेश केशव सर्वी सुरो साहत सर्वश्वत वशंकर पुः स्वाप्त भेदन सर्वथंन फ्रेंस स्विध्य सर्वताग मर्दन सर्वदेव महेश्वर सर्ववंध विमोक्षण सर्व उनर द्वाणाद्याम सर्वित्रह जिवारण सर्वपाप द्वापाममन जनार्ग मास्त्री नभोनभः स्वाहा ॥ य इमां अपराजितां असातिहतां परमवेष्णवीं पिनित सिद्धां महाविधां जपाति पशति द्रणोति रमराति धारथाते की तियातेवा, त तस्याग्त भयं वजी पछाशाति वर्ष वर्ष भयं त समुद भायं वा त तव भार भायं त उनर्प चीर भायं श्वापद भायं वा त भायं

वनवान्य द्रात्रयं धकार रक्ती राजवुक विवोपाविक गर गरद वर्शकरण विद्धाणी-द्वारण मारण माहन स्तं भन वध वंधन भयं वा नभवेत " एतेः मेनेः रुद्धतेः सिर्धः संसिधः प्रामितः तथा अर्एन्सिनीं नमोर्न् ने असर्थ अन्धे आजेने अगिने अग्रेने अपरे अपराजिने क्षिपिन रिनेश्हे समारेत सिर्द एको ल्या हिती तमे उमे धूर्व अव्धात गाय त्री सावित्र जातवेदासे मानरनोक सरस्वाते धरणी धारिणी सीद्रामिनी उनादिते दिते वित्रते भीशे गांधारी प्रातंगी कुठले यशादे सुभने सत्यवादिनी कार्टी कपार्टी पांचाठी कार्टी महाकारी नित्य निर्दे भद्र महंद्री महाराज्ञी सार्वभीम -चक्रवार्तिनी सर्व दृष्ट शमनी सर्व दुः रव विनाशिनी सर्व द्वारेन्य प्रशासनी अपषृत्यु प्रहाष्ट्र पनिवारिणी इं हिरे कमछे ७६२मी पद्मी पद्मावती लारायणी सत्यापाय मकाशिती

स्थालानं जलानं अंतरिश्नातं वा मां रश रश सर्वापर्वेश्यः स्वाहा ॥ घर-या: प्रणस्यते पुष्पं गर्भी वा पतथेदादि प्रीयंते वाखका यस्याः काक वंध्या चयाभवेतः। धारथे द्य उभां विद्या भेति दिविन-विष्यते ॥ रणे राजकुछे द्युतं कित्यं तस्य जयो भवत। शक्नं धार-यान यो इपि समरे कोंड- हारुने युहम इद्यार्भ रोजाणां क्षणान्या-शयते व्यथां ॥ सर्व त्याधि प्रशामने ते जा यु बी वर्धने ॥ शिरोरीण उनराणांच मार्शिम सर्व देहिमां॥ सर्व सिग्धे करी विद्या सर्व मंगर्भ दाग्येनी "तदाथा " अं तभा भगवाते -हीं ऐं श्रीं कीं श्री भगवाते वज्र झरनारिणी अट्ये गिरे बगरे तारे वज्र बेरो-यती धुमावाते चिन्नमन्ते भगमाविती मां रक्ष रक्ष पालय पालय रन सुनातिव महवानंदं बुरु२ सर्व मंगला भीक्षं देग्हे २ एहि ममें हृदये निव-सय २ सकल दः रव हारिद्य निष्ठिय २ सर्व शत्रे निष्ट्रिय २

सर्व विद्धा जिताप संताप महापापादि सर्व दुव्हाप द्वं भेजय २ हत्र २ कालेश्वरी गीरी धार्मिणी विद्ये आले ताले माले गंध बंध प-ग २ विद्यात् संहर २ दु:स्वभात् वितादाय २ र जाते संध्ये दुंदुभीतादे मानस के जो शंकिती चाकिणो वाजीणी शृतिती मिदश चूर्णित नथने तोंबुआनने सहस्कावला सहस्का नेने सहस्कापाद अनेतरवपधारिणी सहरक्ता की हि ताम्ने निगमाग्य वंदे देवी महादेवी महा देवाधिंगवासिनी उमे अपर्ण पार्वती गिगरेने इंगिभवे ग्रीवे सदगरीवे हरिहर बहाँदगिर सकल सुरासुर जनात । त्र भुवतात व्यापिती (जोकत्रथ स्वापिती साधक संजीवनी कालमृत्यु महामृत्यु अपभृत्यु विनाशिनी विश्वे-श्वरी स्विडी स्विडी के शक दायते परुष्पति साहते विरिन्धी विन्ते पुंतुभी शामने शबरी किराती पार्तमी अज-हों-हों-हों नुं जा जा आं को तुरु र पुरु र तु इ र ये मां दिखाते । ते हं ति प्रत्यहें

परोद्नं वा सर्वात् तात् दम२ पर्व तापथ २ नोपथ २ उत्साद्य २ क्राणी माहेश्वरी वेषणवी उपेंदी वाराही वैताधकी अप्रमेथी -यापूडे वारुणी वाथ वेय मां रक्ष २ झन्चेडे विद्ये इंदोर्पेंद्र भागेनी जय विजये शुक्र संजीवनी विध्य वासिनी कामेश्वरी काछरा नी महाशनी माहशनी महामाधे रेणुके हाक्षण काली-चंद्रपृश्वाासिनी त्यने योगेश्वरी वज्र योगिनी जार्छ धर उड्याण पूर्णामिशे कामरुप पीठ निवासिती महाउद्भी अयुष्य द्रंभ प्रमुष्य द्रंभी निवासिती कंर वीर वासिनी इगकं भरी महामारी स्नस कोटी महा मंत्रेश्वरी श्रीमत्पं-च दशाक्षरी धोउ३ते श्री-चन्नाकाते ध्यारिणी श्री विधा परमेश्वरी जय २ जगदीश्वरी इसित स्वास्त पुष्टि नुष्टि वार्धिती कार्भावुरो कामपुथे सर्वकाम वर प्रदे सर्व भूतेस्

भाग्यादि सर्व मंगलं देहि २ पुत्र पोत्रादि सप्तां पालय १ गंजाश्व शिविषादे सका राजानी स्वात दावय २ प्रातिष्य २ सर्वा मेदा था विविधा रोज्ये अद २ वर द २ अम रक्ष २ पाछथ २ पोगय र तावयर जीवयर संजीवयर आर्रद्यर संतीवयर रहें वीयर रों-हों की श्री सर्वजन प्रतो रं जिसे सर्व दुष्ट निही जैसे सर्व राज वशंकरी सर्व जाक वशंकरी सर्व दुव्य गाते पुरव जिन् स्ते। श्री सर्वद्वर हुग विद्वावणी सर्व स्क्री पुरुषा कार्षणी आवादी ती जवाला प्रवी जवाला मानियी शाबिणी संप्राहिमी हिंगुले हार्ब वर्ण योगि महायोगि भगातिंग संयोगिनी कामिनी कामत्तरे को छिनी वाम मार्गरते वामा-यार छिथकरे छिव वामांग वासिनी वाभभार्भ सकाशिता वामिका मेदे पंच प्रकार । स्था-र्व ने सदानंदे ति त्या ने द करी जील पताके महा नी ले महा भी शे महा भी

महा-यां ही महासी ही महाभाणुरी - यं हार्क र अमे जान्ह की यमणंटे न्वें इ छं टे का जिसे । ची ना मणी भेर की भाइ काली भवानी भव भथ भाजिकी अग भाग्यादि सर्व सीभाग्य द्वायिती भक्त काम कट्पद्रभे वाम दुधे सुराभी सुरोलने सर्व काम दुधे भने च्यानंद बरे धर्म अर्थ काम मोश्नाई सर्व मनोरथ स्मिग्हें दायिनी यथा मने स्पितं कार्य तत्मम सिव्हयतु स्वाहा अर्ज भु स्वाहा अर्ज भुवःस्वाहा उठं स्वः स्वाहा उठं अर् भूवः स्वः स्वाहा उठं महा स्वाहा उठं जनः स्वाहा 35 तपःस्वाहा 35 सत्यं स्वाहा 35 अत्तं कितां स्नुतां रस्तातां तला तलं महातल पाताल सम्पालाथ स्वाहा अर्ज प्रवित्रे याभ्य मै अपाने वरुण वायन्युनर प्रीइतन्यु ध्वि धो दश दिशा सह दिक-गुरुमाध त्रभः स्वाहा

॥ अंज पृथ्वी आपोगनिवाधि राकाश पंन्य भूताय नमः स्वाहा अंज क्रह्मा विक्णु महेश्वरार्क गणेश दुर्गद्वाद सुराय नमः स्वाहा ३५ रवींदु बुज सीम्य युक्त शामेश्वर राहुके लादि नवग्रहाय नमः स्वाहा अर्र रे-ही श्रीकीं महाकाकी महालक्षी महासरस्वती-वामुं योगिनी काट्यायन्यादि सर्व शक्येनमः स्वाहा यत्र एवागतं पापं तत्रीन जाते ग-च्छतु स्वाहा अर्नु विधाकितीवछे महावाले आतेवछे सर्व असाध्य सााधिती स्वाहा अड रें-हीं श्रींकीं नमः स्वाहा राता दियां महाविद्यां साक्षा च्या व मुखेत्र्वा। विन्णु कर्णाप देशंतू श्राशिवं कु सते स्वयं ॥ गईवि विद्या मही विद्या : ादीवादीक्योनमोहारः विक्णुनिध्ये भविक्याति वैकावी अपरानिता। वर्धं पूर्व मुख्न निम्वा। मारणे दाक्षणा मुख्न। उत्तरे धन कार्मेत्। पाश्चिमे त्याधिनाश्ते। अनकार्णन् वायत्ये स्तंभने ईशान्यां नपेत्। ने ऋद्यां भूत ताइगाय आश्रेयां सर्वकामदा। पीतासनं पीतवस्त्रं धार-यत्साधको नमः॥

पीत गंधं पीतव करें अथवा रक्त केवलं गुगुछं ध्रुपथे।कीत्यं एकांते-य ाहीवालचे। भेरवं शानी विख्णुंच गाणेश मंदिरे नपेत ॥ राभी विशेष फल दें दिवा कार्टी इनिः श्रीः नदी तीरे तडागेन्य पर्व तस्य गुहायां जपेत । भोजनादी कृतं नित्यं एक द्यं ज्यां तथा ॥ सर्व सिग्दि प्रका -न्पाति मांगट्रंच दिनेदिने द्यत दीपंतु प्रज्वात्यः अनुस्यन कृतीतरः प्रीमी-चैवासनः। सिद्धो निभिये-च जिते द्रियः॥ यत्यपाठ प्रकादेन केशवः सर्व ।साधिवान् " सर्व स्टाष्ट प्रपालंतु महाविद्या प्रसादतः मस्यादि पदा दे हांश्य धृता देत्य विदारितं । यस्य पाठ अभावेण गनेवावंध जागनयं " तद्यं यस्य कस्य यं कामिकाय प्रदापयेत" गुरुभन्ताय दात्रव्यं पशुक्रो तेव दापयेतः सहस्मावति नाम् सिद्धेच शन-वास्प मतारथः अस्य तेन्य महा नंदं सर्व मंगल दावकं ।। त्यक्षावृत्या स्राते विष्णुभविष्याते स संश्वः ॥ नित्य पाठे अभे क्षेप्रं गजाहि

सर्व संपद्रं । सर्व विद्योनमा विद्या सर्व मंत्रोनमोनामा सर्व विद्यो -पशामनी सर्वाभिष्ट प्रशासिना । जवेर्ड क पुरवा देवी शर्नः शरेः त्रपाठवेत्। सिर्द्ध नदा महादेवी वेवणवी अपराजिता। न वासंच न वे ध्यानं म्यानः खंद वार्जितं। न हो मं तर्पणं काश्चित पाउमानेण ।सिद्धयाने " एका ने तु जिने कियां कन्यां वान्य सुवासिनीन्य ॥ पूजिने त् वाभ मार्शेषु सर्वासिष्ट् मवान्युवात् (मवाध्युवात्) इति श्री सर्-या मक्षे उमामहेश्वर संवादे महाविद्या संपूर्णमस्तु । श्रीपरदेवनार्थे अनर्जण मस्तु ॥ श्रीश्चावार्षणमस्तु ॥ श्री अद्भावनार्यणमस्तु ॥ " रम्ब्रम्भ "

अग्रवाहरा १३२ हार्क १८६३ में ग्रह्मार.

[OrderDescription]
,CREATED=01.08.19 16:26
,TRANSFERRED=2019/08/01 at 16:30:41
,PAGES=15
,TYPE=STD
,NAME=S0001226
,Book Name=M-22-DEVIMHAVIDHA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF

,FILE7=0000007.TIF

FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF